पदोंकी वर्णानुक्रमणिका।

	पद संख्या
अजित जिन विनती हमारी	४१
अजित जिनेसुर अघहरण	२
अन्तर उज्जल करना रे भाई	३६
अब नित नेमि नाम भजो	५४
अब पूरीकर नींदड़ी सुन जीया रे	३३
अब मन मेरे वे, सुनि सुनि सीख सयानी	७०
अब मेरे समकित सावन आयो	१९
अरज करे राजुल नारी	२८
अरे मन चलरे, श्रीहथिनापुरकी जात	५७
अरे! हां चेतो रे भाई	६०
अहो! जगतगुरु एक, सुनियो०	७६
अज्ञानी पाप धतूरा न बोय	५
आज गिरिराजके शिखर सुंदर सखी	३१
आदि पुरुष मेरी आस भरोजी	४९
आया रे बुढ़ापा मानी सुधि बुधि	३५
आरती आदि जिनिंद तुम्हारी	६८
एजी मोहि तारिये शान्ति जिनंद	३९
ऐसी समझके सिर धूल	३२
ऐसो श्रावक कुल तुम पाय	६४
और सब थोथी बातैं	४०
करुणा ल्यो जिनराज हमारी, करुणा	७९
काया गागरि जोजरी, तुम देखो०	५५
गरव नहिं कीजे रे, ऐ नर निपट गँवार	१२
चरखा चलता नाहीं, चरखा हुआ	६७
चिन चेतनकी यह विरियाँ रे	३०
जगत जन जूवा हारि चले	५८
जगमें जीवन थोरा, रे अज्ञानी	११
जगमें श्रद्धानी जीव जीवनमुक्त	३४
जपि माला जिनवर नामकी	४४
जिनराज चरन मन मति बिसरै	१७
जिनराज ना विसारो	१६
जीवदया व्रत तरु बड़ो	६३
जै जगपूज परमगुरु नामी	७४
तहाँ ले चल री। जहाँ जादोपति प्यारा	५९
तुम तरन तारन भवनिवारन	७२
तुम सुनियो साधो! मनुवा मेरा ज्ञानी	५०
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव०	७७
त्रिभुवनगुरु स्वामी जी	७५
थाकी कथनी म्हानें प्यारी लगे जी	१३
नेमि विना न रहै मेरो जियरा	२१
नैननिको वान परी, दरसनकी	६५
देखे देखे जगतके देव	२६
देखो गरबगहेली री हेली	२७
देखो भाई! आतम देव विराजै	५३
देख्यो री! कहीं नेमिकुमार	१५
प्रभु गुन गाय रे, यह औसर फेर न	५१
पारस-पद-नख-प्रकाश, अरुन वरन	४७
पुलकन्त नयन चकोरपक्षी	७१
वन्दौं दिगम्बरगुरुचरन	७३
भगवन्तभजन क्यों भूला रे	२०
भलो चेत्यो वीर नर तू	७
भवि देखि छवी भगवानकी	१८
मन मूरख पंथी, उस मारग मति जाय	२२
मनहंस! हमारी लै शिक्षा हितकारी	३८

	पद संख्या.		पद संख्या.
मा विलंब न लाव पठाव तहाँ री	१४	शेष सुरेश नरेश रटे तोहि	४८
मेरी जीभ आठौ जाम	२५	श्रीगुरु शिक्षा देत हे सुनि प्रानी रे	७८
मेरे चारों शरन सहाई	४३	सब विधि करन उतावला	२३
मेरे मन सूवा, जिनपद	६	सीमधर स्वामी, मे चरननका चेरा	३
म्हे तो थाकी आज महिमा जानी	५६	सुन ज्ञानी प्राणी, श्रीगुरु सीख सयानी	८
यह तन जगम रूखडा सुनियो भवि	६६	सुनि ठगनी माया, तें सब जग ठग	९
रखना नहीं तनकी खबर, अनहद	८०	सुनि सुजान ! पाँचो रिपु वशकरि	५२
रटि रसना मेरी ऋषभ जिनद	२४	सुनि सुनि हे साथनि ! म्हारे मनकी	६९
वा पुरके वासणे जाऊ	४	सो गुरुदेव हमारा हे साधो	६१
वीरा ! थारी बान बुरी परी रे	३७	सो मत सांचो हे मन मेरे	४२
वे कोई अजब तमासा	१०	स्वामीजी साची सरन तुम्हारी	६२
वे मुनिवर कब मिलि है उपगारी	४५	हू तो कहा करु कित जाऊ	२९
लंगी लो नाभिनदनसों	१	होगी खेलोगी घर आये चिदानदकन्त	४६